Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

भवभूति के नाटकों में वाचिक–अभिनय : एक अनुशीलन

इन्दल
पूर्व शोधच्छात्र,
संस्कृत विभाग,
बी0आर0डी0बी0डी0पी0जी0 कॉलेज, आश्रम बरहज देवरिया,
उत्तर प्रदेश,भारत।

शोध सारांश– भवभूति अपनी कल्पना शक्ति एवं रचना कौशल के माध्यम से नाट्य–परम्परा का अनुकरण करते हुए, उत्तररामचरितम् को सुखान्त रूपक बना दिया। भवभूति ने नाटक में वाचिक अभिनयें का प्रयोग किया है। यहाँ सम्पूर्ण चमत्कार वाचिक–अभिनय के माध्यम से उत्पन्न होता है। इस प्रकार से कवि ने वाचिक–अभिनय का सफल प्रयोग किया है।

मुख्य शब्द– भवभूति, नाटक, वाचिक, अभिनय, कल्पना, कौशल, संस्कृत, साहित्य, रूपक।

भवभूति अपनी कल्पना शक्ति एवं रचना कौशल के माध्यम से नाट्य–परम्परा का अनुकरण करते हुए, उत्तररामचरितम् को सुखान्त रूपक बना दिया। भवभूति ने नाटक में वाचिक अभिनयें का प्रयोग किया है। नाटक में जब कञ्चुकी श्रीराम को अष्टावक्र के आने की सूचना देने हेतु प्रवेश करता है तो वह श्रीराम को रामभद्र! सम्बोधित कर रुक जाता है, फिर पुनः महाराज! ऐसा सम्बोधन करता है।[1] चूँकि कञ्चुकी श्रीराम के पिता दशरथ का सेवक है, बचपन से वह श्रीराम को देखता आया है और इन्हें रामभद्र! सम्बोधित करता आया है, अतः वह इस उच्चारण में अभ्यस्त है। वह भूल जाता है कि राम अब महाराज बन गए हैं। इस दृश्य में कंचुकी का स्नेह राम के प्रति दिखता है। प्रायः सभी नाट्याचार्यों ने सेवक का अपने राजा के लिए महाराज! शब्द का ही सम्बोधन करना बताया है क्योंकि महाराज पृथिवीपति की उपाधि से शोभित है।

इस प्रसंग में जब अष्टावक्र का प्रवेश होता है तो श्रीराम और सीता दोनों ही उनके सम्मानार्थ खड़े हो कर उन्हें भगवन्! सम्बोधित करते है।[2] यहाँ भगवन्! सम्बोधन मात्र से ही ज्ञात हो जायेगा कि वह परम आदरणीय हैं। यहाँ श्रीराम की भाषा संस्कृत होगी किन्तु सीता प्राकृत बोलेंगी क्योंकि वह स्त्री हैं और स्त्रियों के लिए प्राकृत का विधान है।

श्रीराम राजा के धर्म का निर्वहण करते हुए यह कहते हैं कि प्रजा के सुख के लिए जानकी का भी परित्याग करने में मुझे पीड़ा न होगी।[3] वास्तव में यह कह पाना राम के लिए कथमपि सरल न रहा होगा किन्तु उन्होंने इस प्रकार का कथन पति के रूप में नहीं बल्कि राजा के धर्म का पालन करते हुए कहा है। यहाँ राम बना पात्र पाठ्य–कुशलता के माध्यम से संवाद की प्रस्तुति करेगा, जिससे राम की पीड़ा भी व्यक्त होगी। यह संवाद सर्वश्राव्य है। राम बना नट संस्कृत भाषा का प्रयोग करेगा। यह गुरु एवं लघु अक्षरों तथा मात्राओं की संख्या के कारण निबद्ध–बंध पद है।

महारानी सीता चित्रदर्शन करते समय जब जटा बांधने के दृश्य को देखती हैं तो अकस्मात् ही विषादभरी वाणी में बोलती हैं– **अह्मो एसो जडासंज मणवुत्तन्तो।**[4] यहाँ उन्हें राजकुल परित्याग करने की सम्पूर्ण घटना याद आ जाती है। वह दुःखी होती हैं। वाचिकाभिनय के माध्यम से वह अपने दुःख को अभिव्यक्त करेंगी। इस प्रकार सीता बनी नटी 'अह्मो' पर बल देते हुए अपना संवाद कहेगी। जो सर्वश्राव्य होगा। यह संवाद चूर्ण पद है। स्त्री होने के कारण सीता की भाषा प्राकृत होगी।

द्वितीय अंक में वासन्ती आत्रेयी को अगस्त्य ऋषि के आश्रम का मार्ग बताती है। उस समय पंचवटी, गोदावरी नदी, प्रसवण पर्वत को देखकर वह रुदन करने लगती है और पुत्री सीता का वृत्तान्त उनके स्मृति पटल पर छा जाता है।[5] ऐसे आत्रेयी बनी पात्र वाचिकाभिनय की कुशलता से शोक भाव प्रदर्शित करेगी। दुःख है, रुदन भी है तो वर्ण कम्पित होंगे। सर्वश्राव्य संवाद होगा। पाठ्य–उच्चारण उरस् से होगा क्योंकि निकटस्थ पात्रों में वार्तालाप हो रही है। यहाँ स्त्री होते हुए भी आत्रेयी एवं वासन्ती की भाषा संस्कृत होगी क्योंकि वे दोनों दैवीय पात्र हैं। चूर्ण पद रचना है।

उपर्युक्त क्रम में जब बासन्ती आत्रेयी से सीता के संदर्भ में पूछती है– 'आर्य किमत्याहितंसीतादेव्याः?[6] यहाँ आत्रेयी प्रचलित लोकापवाद को वासन्ती के कानों कहती है।[7] यह संवाद नियतश्राव्य होगा क्योंकि वार्ता सिर्फ दो पात्रों के मध्य हो रही है और अन्य पात्र न सुन सकें, इसलिए कानों में कही गयी है। यद्यपि यह कथा दर्शक सुनेंगे किन्तु मंच पर इस प्रकार अभिनीत किया जायेगा कि अन्य न सुन लें। नटी त्रिपताका हस्तमुद्रा से अन्य पात्रों को बचाकर वासन्ती के कानों में लोकापवाद की कथा सुनायेगी। पाठ्य उच्चारण उरस् से होगा। भाषा संस्कृत होगी। चूर्ण पद शब्द–रचना है।

द्वितीय अंक में शम्बूक का वधन करने के पश्चात् श्रीराम दण्डकारण्य में प्रकृति की शोभा का अवलोकन करते हुए पंचवटी में प्रवेश करते हैं। पंचवटी के दृश्य देखते ही वह सीता की स्मृति से अवसन्न हो जाते हैं। सीता के साथ बिताया गया प्रत्येक क्षण उनके वियोग में श्रीराम का दारुण, विषरस की भांति लग रहा है। वह स्वयं कहते हैं कि मेरा शोक मानों फूटे हुए फोड़े की भांति व्याकुल कर रहा है।[8] संवादोच्चारण स्थान उरस् होगा। यहाँ राम संस्कृत भाषा का प्रयोग करेंगे। यह संवाद सर्वश्राव्य होगा। उक्त कथन के माध्यम से उनके मनोभावों का प्रकटीकरण हो रहा है। वाचिकाभिनय के सहयोग से ही राम बना नट अपने दुःख को अभिव्यक्त करेगा। निबद्ध–बंध शब्द विधान है। यहाँ करुण रस होने से वर्ण कम्पित होंगे तथा निषाद एवं गान्धार स्वरों का प्रयोग होगा। इस पद्य में उत्प्रेक्षा अलंकार तथा शिखरिणी छन्द है। प्रसाद गुण है।

नाटक के तृतीय अंक में सीता को छाया के रूप में दिखाया गया है। गंगा के आशीर्वाद के प्रभाव से पृथ्वी पर विद्यमान वनदेवता तथा सामान्य मनुष्य उन्हें नहीं देख सकते हैं। वे इस अंक में अदृश्य रूप में उपस्थित रहती

हैं। नाट्य–मंच के समय मंच पर उपस्थिति राम आदि जन सीता बनी नटी को न देखने का अभिनय करेंगे। किन्तु दर्शक देख सकेंगे। इस अंक में जब सीता का प्रवेश होता है तो मुरला उसे देख कर कहती है–[8]

किसलयमिव मुग्धं बन्धनाद्विप्रलूनं।
हृदयकमलशोषी दारुणो दीर्घशोकः।
ग्लपयति परिपाण्डु क्षाममस्याः शरीरं,
शरसिज इव घर्मः केतकी गर्भपत्रम्।।'

उक्त पद्य में कथन मात्र से ही विरहिणी सीता का मार्मिक रूप उभरकर सामने आ जाता है। यह पद्य अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। मुरला द्वारा कहे गये वचनों से सीता की मनोदशा तथा संवेदनाओं की भी अभिव्यक्ति हो रही है जिसे दर्शक भी सरलता से समझ रहे हैं। यह संवाद सभी के सुनने योग्य होने से सर्वश्राव्य होगा। यहाँ दो दैवीय नदियाँ आपस में वार्ता कर रही हैं, इसलिए उनकी भाषा संस्कृत होगी। करुण रस के होने से वर्ण कंपित अथवा अनुदात्त होंगे तथा निषाद या गान्धार स्वर का प्रयोग होगा। दोनों से वर्ण कंपित अथवा अनुदात्त होंगे तथा निषाद या गान्धार स्वर का प्रयोग होगा। दोनों पात्रों के मध्य किञ्चित् दूरी होने से उच्चारण स्थान कण्ठ रहेगा। प्रस्तुत पद्य में रूपक अलंकार है तथा किसलयमिव एवं शरदिज इव में उपमा अलंकार है। पद्य में मालिनी छन्द है।

चतुर्थ अंक में दो तपस्वी बालक परस्पर बातचीत करते हुए मंच पर प्रवेश करते हैं। वे वाल्मीकि आश्रम की शोभा तथा आनन्दमय वातावरण का इस प्रकार वर्णन करते हैं कि मंच पर बना कृत्रिम आश्रम भी दर्शकों को नैसर्गिक तथा स्वाभाविक सा लगने लगता है।[9] इस प्रकार यहाँ वाचिकाभिनय का ही चमत्कार दिखता है। पद रचना चूर्ण बन्ध है। तपस्वी बालकों के मध्य किंञ्चित् दूरी होने से संवादों का उच्चारण कण्ठ से होगा। बालकों की भाषा संस्कृत होगी तथा संवाद सर्वश्राव्य होंगे। आश्रम का स्वाभाविक वर्णन होने से यहाँ स्वाभावोक्ति अलंकार है तथा प्रसाद गुण है। शृंगार रस होने से उदात्त वर्ण है। यहाँ पंचम अथवा मध्यम स्वरों का प्रयोग होगा।

आश्रम में जनक का आगमन होता है। वे सीता के निर्वासन से अत्यन्त दुःखी हैं, शोकाकुल हैं कि तभी कौशल्या उनसे मिलने आती हैं जिससे जनक का संताप और बढ़ जाता है।

पष्ठ अंक में जब राम लव को देखते हैं तो उनका हृदय वात्सल्य से भर जाता है। राम लव का आलिंगन करते हैं। इस प्रकार लव अपने प्रति राम का अकारण स्नेह देखकर स्वगत कथन करता है कि श्रीराम मेरे प्रति इस प्रकार का स्नेह रखते हैं और मैंने इनसे ही विद्रोह करने के लिए हथियार उठा लिया।[10] यहाँ यद्यपि स्वगत कथन है किन्तु प्रेक्षकों के लिए यह श्राव्य होगा इसलिए उक्त वाक्य का उच्चारण लव बना नट करेगा, जिसे मंचस्थ कलाकार न सुनने का अभिनय करेंगे अन्यथा नेपथ्य में संवाद का उच्चारण किया जायेगा, भाषा संस्कृत होगी। यहाँ संवाद रचना चूर्ण–पद है।

नाटक के सप्तम अंक में वाल्मीकि आश्रम में एक दिव्य नाटक का अभिनय होता है, जिसमें राम–सीता की कथा को दिखाया जाता है, जिसके दर्शक उत्तररामचरितम् के नायक श्रीराम तथा अन्य चरित्र होते हैं। इसमें राम द्वारा परित्यक्ता एवं प्रसववेदना से पीड़ित एकाकिनी सीता गंगा में कूद पड़ती है। सीता के शिशुओं को गोद में लेकर तथा सीता को लेकर भागीरथी एवं पृथ्वी जल से बाहर आती हैं तथा सीता को धैर्य बंधाती हैं। राम इस दृश्य को वास्तविक समझकर शोकावेग से व्याकुल हो उठते हैं। उनकी व्याकुलता वाणी से अभिव्यक्त होती है। वह सीता का स्मरण करते हुए कहते हैं– हा देवी, दण्डकवन में प्रवास–काल की प्रियसंगिनी! तुम्हारी यह दुर्दशा मेरे ही कारण

हुई है।[11] यहाँ राम बना नट हा देवी पर बल देते हुए अपने मनोभावों की अभिव्यंजना करेगा। कंपित वर्णों का प्रयोग करते हुए वह संस्कृत भाषा में यह संवाद कहेगा। सभी के सुनने योग्य होने से यह सर्वश्राव्य संवाद है। उच्चारण स्थान उरस् होगा क्योंकि वह रोते हुए स्वयं से भुनभुनाते हुए यह कथन करता है। चूर्ण–पद शब्द–रचना है। यहाँ राम सीता को देवी सम्बोधित कर रहे हैं। इस प्रकार पत्नी को देवी कहना नाट्यशास्त्रीय नियमानुसार उचित है।

नाटक के सप्तम अंक में गर्भांक नाटक का विधान राम, सीता कुश तथा लव का सुखद मिलन कराने हेतु किया गया है। कौशल्या को देखकर उन्हें राम–परिवार पर क्षोभ होता है। उनका क्रोध एवं दुःख और बढ़ जाता है। आज कौशल्या के दर्शन जनक को महोत्सव की भाँति नहीं लग रहे हैं, बल्कि उसी प्रकार कष्टकारी लग रहे हैं जैसे किसी ने उनके घाव पर नमक छिड़क कर उनके कष्ट (पुत्री के वियोग से उत्पन्न कष्ट) को और बढ़ा दिया हो।[12] वे अपने क्रोध को उग्रता से नहीं बल्कि वचनों की कुटिलता से व्यक्त करता हैं। वह स्वर–वैचित्र्य के माध्य से बहुत ही निष्ठुरतापूर्वक कंञ्चुकी से पूछते हैं।[13]

अप्यनामयमस्याः प्रजापालकस्य मातुः?

उक्त पंक्ति में जनक काकु ध्वनि के माध्यम से कौशल्या को उलाहना दे रहे हैं कि अपने पुत्र के द्वारा मेरी पुत्री का निर्वसन के बाद अब तो वह राजमाता स्वस्थ होंगी। जानकी की भाषा संस्कृत होगी तथा संवाद सर्वश्राव्य होगा।

नाटक के पंचक अंक में तुमुल–युद्ध का वर्णन किया गया है। इस अंक में लव एवं चन्द्रकेतु के मध्य युद्ध आरम्भ होता है जिसमें लव जृम्भकास्त्र का प्रयोग करता है। जिसे देखकर चन्द्रकेतु विस्मृत हो जाता है। यहाँ यद्यपि नेपथ्यज–विधि के माध्यम से जृम्भकास्त्र को मंच पर दिखाया जायेगा किन्तु जब चन्द्रकेतु बना नट शब्दशः जृम्भकास्त्र के प्रभाव का वर्णन करता है।[14] तब प्रेक्षक–गण को ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे साक्षात् रूप से वास्तविक जृम्भकास्त्र को देख रहे हैं। यहाँ सम्पूर्ण चमत्कार वाचिक–अभिनय के माध्यम से उत्पन्न होता है। इस प्रकार से कवि ने वाचिक–अभिनय का सफल प्रयोग किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1– उत्तररामचरितम्, प्रथम अंक, पृ0 134।

2– उत्तररामचरितम्, प्रथम अंक, पृ0 134।

3— उत्तररामचरितम्, 1/12।

4— उत्तररामचरितम्, द्वितीय अंक, पृ0 203।

5— उत्तररामचरितम्, द्वितीय अंक, पृ0 204।

6— उत्तररामचरितम्, 2/26।

7— उत्तररामचरितम्, 4/1।

8— उत्तररामचरितम्, षष्ठ अंक, पृ0 431।

9— उत्तररामचरितम्, सप्तम अंक, पृ0 479।

10— उत्तररामचरितम्, 4/7।

11— उत्तररामचरितम्, चतुर्थ अंक, पृ0 319।

12— उत्तररामचरितम्, 5/13—14।